पी.एम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक १ हाथीबड़कला देहरादून

फोन एंव फैक्स नंबर: 0135-2743244

ई-मेल -kvhbk1ddn@gmail.com

वेबसाइट:- www.no1dehradun.kvs.ac.in

हिंदी मासिक पत्रिका

हमारे संरक्षक

डॉ सुकृति रैवानी
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, देहरादून संभाग

श्री ललित मोहन बिष्ट
सहायक आयुक्त
के.वि.सं, देहरादून संभाग

श्री सुरजीत सिंह
सहायक आयुक्त
के.वि.सं, देहरादून संभाग

श्रीमती स्वाति अग्रवाल
सहायक आयुक्त
के.वि.सं, देहरादून संभाग

प्राचार्य की कलम से

हिंदी मासिक पत्रिका का प्रथम संस्करण अपने नवीन कलेवर के साथ प्रस्तुत है । यह पत्रिका विद्यालय के बहुआयामी व्यक्तित्व विद्यार्थियों की प्रतिभा एवं सृजनात्मकता का दर्पण है। विद्यार्थियों के रचनात्मक लेखन को अभिव्यक्ति मिल सके इसके लिए यह मासिक पत्रिका एक नया प्रयोग और प्रयास है ।
विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए हम सतत् प्रयत्नशील है।
मैं परम आदरणीय मैडम डॉक्टर सुकृति रैवानी, उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन देहरादून संभाग के प्रति उनके कुशल मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। समय-समय पर वे अपनी गरिमामय उपस्थित से हमारा मनोबल बढ़ाते हैं और आशा करता हूं कि भविष्य में भी उनका ऐसा ही मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित

श्री मयंक शर्मा

प्राचार्य

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला

संपादक मंडल

- श्री राम किशोर मीना, स्नातकोत्तर शिक्षक-हिंदी
- श्रीमती साधना मनचंदा, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका –हिंदी

कवर पेज डिजाईन

- श्रीमती तारा राणा , प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका-कला

तकनीकी सहयोग

- श्री प्रताप सिंह चौहान, संगणक संसाधक

अन्य सहयोगकर्ता

- श्रीमती राजेश कुमारी, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका –हिंदी
- श्रीमती सोनिया गौतम, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका –हिंदी
- सुश्री रचना, प्राथमिक शिक्षिका
- श्री नवीन कुमार मीना, प्राथमिक शिक्षक

संपादकीय

विद्यालय की हिंदी मासिक पत्रिका का प्रथम संस्करण आप सभी के लिए प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका विद्यालय की गतिविधियों का एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक का प्रतिबिंब है।

हम आभारी हैं माननीय प्राचार्य महोदय के जिनके मार्गदर्शन एवं निर्देशन में पत्रिका के प्रथम संस्करण ने साकार रूप लिया है।

आने वाले अंकों में और अधिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए हम कृत संकल्प हैं।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 हाथी बड़कला की इंद्रधनुषी झलकियां

विद्यालय पत्रिका गवाक्ष है विद्यालय की गतिविधियों का आकलन और अवलोकन करने का। दिसंबर माह में विद्यालय में अनेक गतिविधियों का आयोजन हुआ

। प्रस्तुत है उन गतिविधियों की इंद्रधनुषी झलकियां **11/12/2023** भारतीय भाषा दिवस पर विद्यालय में भाषा दिवस का आयोजन किया गया । विद्यार्थियों ने अपने-अपने राज्य की वेशभूषा और अपनी मातृभाषा में अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हुए अपने राज्य एवं अपनी मातृभाषा को गौरवान्वित करके अनेकता में एकता की एक अद्भुत झलक प्रस्तुत की । (संकलनकर्ता- श्रीमती साधना मनचंदा)

19/12/23 को पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक **1** हाथी बड़कला में वार्षिक खेलकूद दिवस का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रशांत कुमार, उप महा सर्वेक्षक भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने समारोह का उद्घाटन किया । मुख्य अतिथि महोदय ने अपनी गरिमामय उपस्थित से खिलाड़ियों का उत्साह द्विगुणित कर दिया। बाल वाटिका के नन्हे- मुन्ने बच्चों की जलेबी रेस से लेकर रिले रेस और अंत में अध्यापिकाओं और छात्राओं की एवं अध्यापकों और छात्रों की रस्साकसी प्रतियोगिता आकर्षण का केंद्र रही। चारों सदनों के मार्च पास्ट के अद्भुत प्रदर्शन ने मुख्य अतिथि को मंत्र मुक्त कर दिया। विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

(संकलनकर्ता- श्रीमती साधना मनचंदा, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला)

<u>मंजिल</u>

उपदेश नहीं देते हैं तुमको, बस इतना बतलाते हैं।

बिन मंजिल के राही अक्सर, राहों में खो जाते है ।।

ज्ञान के खातिर बुद्धा ने भी राजपाठ सब छोड़ा था।

राम ने भी सीता के खातिर धनुष शिवा का तोड़ा था ।।

गीता में उपदेश मिला है, कर्म सफलता देता है।

बिना कर्म के राही अक्सर, मंजिल को खो देता है ।।

इससे इतनी बात समझ लो, मंजिल गर तुमको पाना है ।

राहों में बेकार भटक कर जीवन नहीं गंवाना है ।।

उपदेश नहीं देते हैं तुमको, बस इतना बतलाते हैं ।

अनन्या जुयाल (माँ का विशेष योगदान)
कक्षा - ग्यारहवीं स
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला

माँ

जननी जो कही जाती है

रखवाली वो जानी जाती है

नटखट से हमारे मन को जो पढ़ लेती है

काम हमारे हरदम वो आती है

बिना स्वार्थ के करे मदद हमारी

क्योंकि इसी में है उसकी ख़ुशियाँ सारी

हमारे जीवन को ही अपना जीवन माने

खुशी को दुगुना और ग़म को आधा कर डाले
कहीं नहीं मिले पूरे विश्व में ऐसा व्यक्तित्व महान्
क्योंकि यह है जननी हमारी जिसे कहते हम माँ ॥

सार्थक चमोली
कक्षा - ग्यारहवीं - स
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला

पेड की आत्मकथा

मैं एक पेड़ हूं मेरा जन्म इसी मिट्टी में हुआ है। बरसों पहले मुझे किसी ने बोया था। शुरुआत में एक पौधा था। एकदम नाजुक और कोमल। जब-जब बारिश का मौसम आता तब-तब मैं तेजी से बढ़ने लगता। मुझे बारिश और सूरज की किरणें बहुत पसंद है।

शुरुआत में जब मैं छोटा था तब मुझे बहुत परेशानियां झेलनी पड़ती थी। छोटे होने के कारण सारे जानवर मुझे परेशान करते थे, मुझे खाने की कोशिश करते थे। मैं जैसे-तैसे जान बचा लेता था। कोई मेरी टहनियां या पत्ते तोड़ देता था। अब मैं बड़ा हो चुका हूं। पौधे से मैं वृक्ष बन गया हूँ। समय के साथ वातावरण में ढल चुका हूं। अब मुझे सारे मौसम का अंदाजा है, कड़ी से कड़ी धूप हो या आंधी तूफान आ जाए मैं बिल्कुल भी नहीं डगमगाता।

अब मैं मनुष्यों को अपनी सेवा प्रदान करता हूँ। मैं उन्हें शीतल छाया देता हूँ, फल-फूल देता हूँ। मेरी छांव में लेट कर मुसाफिर आराम करते हैं। लकड़ी, कागज, मसाले, सब्जियां, ऑक्सीजन और तरह-तरह की चीजें मैं मनुष्य को देता हूँ। मेरे बिना मनुष्य का जीवन असंभव है।

मेरे इतने फायदे होने के बावजूद आज मनुष्य मेरी जान के पीछे पड़ा हुआ है। शहरों में बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने के लिए और अपने फायदे के लिए मुझे काटने लगा है। जिसका दुष्परिणाम भी उसे झेलना पड़ रहा है। मुझे कभी-कभी डर लगता है कि क्या एक दिन कुल्हाड़ी चलाकर मुझे भी काटा जाएगा? क्या मुझे भी नष्ट किया जाएगा?

यह सवाल मैं मनुष्य से पूछना चाहता हूँ।

मोहित खंडूरी
कक्षा - छठवीं स
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला

हौंसला

यह कहानी है एक ऐसी महिला की जिसने विपरीत परिस्थितियों में भी हौंसला नहीं छोड़ा और अनपढ़ होने के बावजूद अपने बच्चों को उस मुकाम पर पहुंचा दिया, जहां अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे लोग भी नहीं पहुंचा सकते।

कहानी शुरू होती है आज से साठ साल पहले उत्तराखंड के एक गांव से। एक बालिका जिसका नाम कांति है। उम्र यही कोई चौदह-पंद्रह साल रही होगी। उसका विवाह उत्तराखंड के ही किसी दूसरे गांव में महेश नाम के लडके से करवा दिया गया। महेश नौकरी की तलाश में दिल्ली महानगर में पहुंच जाता है। उसकी पत्नी भी उसके साथ दिल्ली आ जाती है। उसकी नौकरी एक प्राइवेट कंपनी में लग जाती है। वे एक कमरा भी किराए में ले लेते हैं। शादी के कुछ सालों बाद उन्हें दो बेटी आशा और मीना तथा एक बेटा दीपक हो जाते हैं। आशा की उम्र दस साल, मीना की उम्र आठ साल और दीपक की उम्र यही कोई दो महीने रही होगी कि अचानक दिल का दौरा पड़ने से कांति के पति महेश की मृत्यु हो जाती है। पच्चीस साल की छोटी-सी उम्र में ही कांति पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। अब कुछ दिनों तक रोने-धोने के बाद कांति को बच्चों की परवरिश की चिंता सताने लगी। अनपढ़ थी इसलिए पहले सौ तक गिनती सीखी फिर सिलाई बुनाई का काम सीखा। फिर किसी डॉक्टर के यहां पर आया का काम किया। अपने हौसलों को कभी परास्त नहीं होने दिया। इसी तरह अपने बच्चों को पढ़ाया लिखाया। आज बड़ी बेटी आशा एक बड़ी कंपनी में कार्यरत है, छोटी बेटी मीना डॉक्टर बन गई और बेटा भी सरकारी नौकरी में कार्यरत है। अब कांति ने अपने तीनों बच्चों की अच्छे परिवारों में शादी करवा दी। अपनी मां कांति के हौसलों के दम पर आज तीनों बच्चे अपनी-अपनी जिंदगी में बहुत खुश है। अब कांति भी बहुत खुश है। अगर वह पति के गुजरने के बाद हार मान लेती तो अपने बच्चों को कभी इस मुकाम पर नहीं पहुंच पाती और फिर उन्हें और उनके बच्चों को दुख के सिवा कुछ नहीं मिलता। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में हौसलें बुलंद रखने चाहिए और अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ता रहना चाहिए। सफलता एक दिन हमारे कदम जरूर चूमेगी।

सिद्धार्थ सेमवाल
कक्षा - बारहवीं अ
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला

दौर

एक समय में तुम बेहतर थे एक समय कोई और होगा
यह तुम्हारा दौर है तो वह किसी का दौर होगा

तुमसे बेहतर भी यहां पर लोग आते ही रहेंगे
तुम थे बेहतर तुमसे बेहतर भी यहां आते रहेंगे

लोग किसको याद रखते हैं यहां जाने के बाद
याद आती है फिर उनकी यादों में आने के बाद

याद तो फिर याद है हर वक्त ये रहती नहीं
यादों के सहारे तो यह जिंदगी कटती नहीं

अपनी अपनी जिंदगी के अपने-अपने ख्वाब है
उसको पूरा करने को यहां हर कोई बेताब है

फिक्र ना कर इस समय में तेरा भी एक दौर होगा
बाद उसके फिर यहां पर तुमसा कोई और होगा

श्री सतीश चंद्र (अभिभावक- संजना, कक्षा- नवीं 'स')

सत्-पथ

सत्-पथ को न भूल मनुष्य इस पर तुझको चलना है
है यही पथ कठिन सही भी जिस पर तुझको बढ़ना है
भेद-भाव में अटक गया तू जात-पात में उलझ गया तू
जात-भेद में अटक उलझ के व्यक्तित्व को भूल गया तू
अरे, त्याग सभी ये भेद-भाव तुझे इनसे ऊपर उठना है
है यही पथ .. ..
माय तेरा जीवन उद्देश्य है माय ही मृत्यु का कारण है

माय तेरी मिथ्या प्रसन्नता माय तेरे संतोष का कारण है
इस मोह, माया को त्याग तुझे पर-संताप को हरना है
है यही पथ .. ..
स्व-प्रसन्नता से प्रसन्न नहीं पराई प्रसन्नता से दुखी है तू
दान प्रसन्नता का भूल गया बच दुख दर्द का दानी है तू
प्रसन्नता का दानी बन जा तू तुझे सबका दुख हरण है
है यही पथ .. ..
ऊँच-नींच का दास बना है व अंधकार में खो गया है
स्वयं की इच्छा के परिपूर्ण में कुटिल हृदय हो गया है
प्रेम ज्योत जलाकर तुझको सबको प्रकाशित करना है
है यही पथ .. ..
मानवता का प्रतीक बन परोपकार ही कर्तव्य हो तेरा
पराए दुख तेरे अपने हों तथा सत्य ही गंतव्य हो तेरा
सम्मान की भावना हो हृदय में, मात्र प्रेम ही करना है
है यही पथ .. ..

ममशाद अहमद
स्नातकोत्तर शिक्षक – रसायन विज्ञान
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-**1**
हाथीबडकला

नारी

नारी एक शब्द नहीं संसार है,

मनुष्य के जीवन का आधार है,

माँ, बहन, पत्नी, बेटी, साथी

सब रूपों का समाहार है,

नारी शब्द नहीं संसार है ।।

क्यों फिर नारी का नहीं आदर-सत्कार,

आज की नारी है दुर्गा- -उमा का अवतार,

समय आने पर बन जाती एक ढाल है,

नारी शब्द नहीं संसार है ।।

क्यों नारी को तुच्छ माना जाए

जब वह पुरुष से आगे हर क्षेत्र में फतेह पाए

आज हर जगह नारी का सम्मान है

मुझे नारी होने का अभिमान है

नारी शब्द नहीं संसार है।।

श्रीमती सोनिया गौतम

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक - हिन्दी

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-**1** हाथीबडकला

मेरा मन

इस खिड़की के बाहर की दुनिया कितनी खूबसूरत है

दिख तो रही है लेकिन अछूत है।

मन करता है इस सावन की बारिश में भीग जाऊं,

भीग कर मन भर जाए तो किसी पेड़ के नीचे बैठ जाऊं।

बैठ कर इस आसमान को निहार पाऊं, जो बरसकर इस प्राकृतिक चक्र को पूरा करता है,

मैं भी अपने आध्यात्मिक चक्रों पर जीत पाना चाहती हूं,

बेचिंतित हो कर अपनी सेहालियों से गप्पे मारना चाहती हूं

बिना इस उलझन के, कि ये भी करना है, वो भी बाकी है,

बस पूरी तरह से यही होना चाहती हूं,

कल या परसों का सोचकर इस आज को नहीं खोना चाहती हूं,
इस दुनिया की दौड़ से आगे बढ़कर, बस खुश होना चाहती हूं।
इस बारिश में भीगना तो आसान है,
लेकिन इसे महसूस करना चाहती हूं।
किसी योगी की तरह ध्यानमग्न होना चाहती हूं,
इस जिंदगी की उलझनों से सुलझना चहती हूं ।

सुश्री रचना
प्राथमिक शिक्षिका
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला

पहेलियाँ

सर्दी में सबको भाता हूँ
सबके कपड़े फटाफट सुखाता हूँ
रोज सुबह अंधेरे को भगाता हूँ
और श्याम को वापस चले जाता हूँ

उत्तर - सूरज

बच्चे शिक्षक मुझको भाते
प्रतिदिन मुझसे मिलने आते
पर छुट्टियों में हो जाता हूँ परेशान
जब सब कुछ हो जाता सुनसान

उत्तर- विद्यालय

मैं हूँ बच्चों की साथी
प्रतिदिन उनके संग स्कूल में आती
बच्चे स्कूल में हो जाते परेशान
जिस दिन मैं घर पर रह जाती

उत्तर- पुस्तक

श्री नवीन कुमार मीना

प्राथमिक शिक्षक

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हाथीबडकला